जून : 2025
ISSN 2278-392X

RNI No. CHHHIN/2011/44763
Postal Regn.No. C.G./RYP DN/98/2021-23
Posting Date- 20 Every Month
Publication Date - 15 Every Month

छत्तीसगढ़-मित्र

साहित्य और विचार का मासिक

संस्थापक : पं. माधवराव सप्रे संपादक : डॉ. सुशील त्रिवेदी प्रवेशांक : जनवरी 1900

स्वदेशी और सप्रे जी पर विशेष

केंद्रीय हिंदी निदेशालय, भारत सरकार के चयनित ग्रंथालयों के लिए स्वीकृत पत्रिका मूल्य : 40 रू.

RNI - CHHHIN/2011/44763

ISSN 2278-392X

Postal Regn.No. C.G./RYP DN/98/2021-23
Posting Date- 20 Every Month

छत्तीसगढ़-मित्र

साहित्य और विचार का मासिक
पं. माधवराव सप्रे द्वारा स्थापित-प्रकाशित

स्थापना वर्ष
जनवरी -1900

वर्ष : 16 अंक : 6
जून : 2025

❁ ❁ ❁

संपादक
डॉ. सुशील त्रिवेदी

❁ ❁ ❁

प्रबंध संपादक
डॉ. सुधीर शर्मा

❁ ❁ ❁

संपादन-परामर्श
नन्दकिशोर तिवारी
डॉ. स्नेहलता पाठक
डॉ. चित्तरंजन कर
गिरीश पंकज

❁ ❁ ❁

अक्षर-संयोजन
कन्हैया साहू

❁ ❁ ❁

आवरण चित्र - कन्हैया साहू

❁ ❁ ❁

सहयोग राशि

मूल्य : 40 रु. : इस अंक का
500 रु. : वार्षिक
1500 रु. : तीन वर्ष
3000 रु. : पाँच वर्ष
5000 रु. : आजीवन

इस अंक में....

स्वदेशी और सप्रे

- भारतीय अस्मिताबोध और संवेदना के संवाहक माधवराव सप्रे — डॉ. अंगदकुमार सिंह 3
- बायकाट अथवा बहिष्कार : और स्वदेशी वस्तु–व्यवहार की प्रतिज्ञा — माधवराव सप्रे 5
- खादी : एक कपड़ा और उससे आगे — एकता जैन 11
- लोकमान्य तिलक की 'स्वदेशी' अवधारणा और आत्मनिर्भर भारत — दिलीप धारुरकर 17
- स्वदेशी यानी स्व का बोध — उमेश चतुर्वेदी 19
- स्वदेशी और भारतीयता — धर्मपाल 21
- हिंदी नवजागरण के दो अग्रदूत : महावीर प्रसाद द्विवेदी एवं माधवराव सप्रे — गौरव अवस्थी 27

ललित निबंध

- अपनी माटी, अपना देश — डॉ. श्रीराम परिहार 30

समीक्षा

- "नाम अब भी चाहता है वह" : कुलभूषण का नाम दर्ज कीजिए — चन्द्रकला त्रिपाठी 34

कला–संस्कृति

- बस्तर की कांस्य कला (ढोकरा) आदिम सभ्यता रूप — स्वाति आनंद 39

अनूदित कहानी

- मौन लोग — सुशांत सुप्रिय 41

छत्तीसगढ़ी लोककथा

- देवता भागे — डॉ. मृणालिका ओझा 49

आसपास

- भूपेंद्र साहू की रंग युक्तियां बरास्ता "भरथरी" — राजेश गनोदवाले 50

कविताएं

- सावित्रीबाई, क्या कहूँ तुमसे — संतोष पद्माकर पवार 33
- बादलों के पार — डॉ. मल्लिका त्रिपाठी 37

छत्तीसगढ़-मित्र में प्रकाशित रचनाओं के लिए, संपादक मंडल की सहमति अनिवार्य नहीं है। लेखकों द्वारा उनकी रचनाओं में प्रस्तुत विचार व दृष्टिकोण उनके अपने हैं, छत्तीसगढ़-मित्र परिवार के नहीं। समस्त मामले रायपुर न्यायालय में ही विचाराधीन।

- संपादकीय पता : **वैभव प्रकाशन,** होटल इमराल्ड के पीछे, पी.एस. सिटी मार्ग, गली नं.-5, श्याम चौक, न्यू चंगोराभाठा, रायपुर (छत्तीसगढ़)
  मो. 094253-58748, 90390-58748 (प्रबंध संपादक)
  09826144434 (संपादक)
- ई-मेल : chhattisgarhmitra@gmail.com
- वेबसाइटस : www.chhattisgarhmitra.com
- फेसबुक : chhattisgarhmitra\facebook.com

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय भारत सरकार द्वारा चयनित ग्रंथालयों के लिए स्वीकृत पत्रिका

पं. माधवराव सप्रे साहित्य शोध केंद्र,
रायपुर (छत्तीसगढ़) का रचनात्मक सहयोग

संपादकीय

माधवराव सप्रे जी एक महान क्रांतिकारी, पत्रकार और हिन्दी भाषा के प्रोत्साहक थे। उन्होंने "छत्तीसगढ़ मित्र" पत्रिका का सम्पादन किया और छत्तीसगढ़ में पत्रकारिता के स्थापत्य के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। सप्रे जी स्वतन्त्रता संग्राम में भी सक्रिय थे और देश की आजादी के लिए काम किया। उनकी हिन्दी भाषा के प्रति समर्पण और पत्रकारिता के क्षेत्र में योगदान ने उन्हें एक महान व्यक्तित्व बनाया। उनके जीवन और कार्यों से हमें प्रेरणा मिलती है और उनके आदर्शों को अपनाने का प्रयास करना चाहिए। सप्रे जी की विरासत आज भी प्रासंगिक है।

इस अंक में प्रकाशित उनका लेख–अंश स्वदेशी आंदोलन और बहिष्कार के महत्व पर चर्चा करता है। उनका तर्क था कि जब सरकार प्रजा की प्रार्थना और मांगों पर ध्यान नहीं देती है, तो प्रजा को अपने अधिकारों की रक्षा के लिए अन्य उपायों का सहारा लेना पड़ता है।

इस अंक के स्वदेशी केंद्रित लेखों में बंगाल प्रांत के लोगों की विलायती वस्तुओं के बहिष्कार की प्रतिज्ञा की गई है और इस तरह के उपायों से सरकार पर दबाव डाला जा सकता है और अपनी मांगों को पूरा करवाया जा सकता है।

दिलीप धारुरकर ने अपने आलेख में कहा है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आत्मनिर्भर भारत की अवधारणा प्रस्तुत की है, जो लोकमान्य तिलक की "स्वदेशी" अवधारणा से प्रेरित है। आत्मनिर्भर भारत अभियान के तहत 20 लाख करोड़ रुपये का आर्थिक पैकेज घोषित किया गया है और मजदूरों, किसानों और श्रमिकों के लिए विभिन्न योजनाएं घोषित की गई हैं। स्वदेशी और आत्मनिर्भर भारत की अवधारणाएं देश के विकास और स्वतंत्रता के लिए महत्वपूर्ण हैं। आत्मनिर्भर भारत की अवधारणा देश को आत्मनिर्भर बनाने और उसकी अर्थव्यवस्था को मजबूत करने पर जोर देती है, जो देश के विकास के लिए आवश्यक है।

इस अंक में एकता जैन, उमेश चतुर्वेदी और धर्मपाल जी के महत्वपूर्ण आलेखों से यह साबित होता है कि स्वदेशी भारत की आत्मा का स्वर था और आज भी इसकी आवश्यकता है। आज सांस्कृतिक रूप से मनुष्य आधुनिक वस्तु और विचारों से प्रदूषित है, वह अपनी परंपरा की ओर लौटना चाहता है। यह अं प्रमाणित करना चाहता है कि स्वदेशी एक विचार है, एक आंदोलन है। महात्मा गांधी के सपनों का।

– डॉ. सुशील त्रिवेदी

जयंती

हिन्दी मेरी मौसी है और यही मुझे पाला–सम्भाला करती है इसीलिए जो कुछ भी मुझसे सेवा बनी, मौसी की ही कर पाया।'' इसमें कोई सन्देह, किसी को भी नहीं करना चाहिए कि 'हिन्दी मौसी' के इस प्रेम को सप्रे जी अपने से कभी अलग नहीं कर पाये और आजीवन इसकी सेवा में तल्लीन रहते हुए खुद को समर्पित कर दिया।

भारतीय अस्मिताबोध और संवेदना के संवाहक माधवराव सप्रे

डॉ. अंगदकुमार सिंह, बांसगांव, गोरखपुर, उत्तरप्रदेश

साहित्य–समीक्षा

सदियों पहले भारतीय इतिहास में विश्व को एक परिवार मानते हुए 'बसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना विक. सित की गयी। भारत सिर्फ़ अपने ही देश को परिवार नहीं मानता बल्कि पूरी दुनिया में जितने भी देश हैं सभी को अपना परिवार और कुटुम्ब मानता है। भारत ने कभी किसी का दुर्भावनावश अहित नहीं किया है बल्कि दुर्भावनाग्रस्त देश को भी गले लगाकर उसकी पीठ थपथपाई और सद्भाव व्यक्त किया, सहानुभूति तथा संवेदना की डोर में बाँधकर उसके प्रति सिर्फ़ प्रेम ही प्रकट किया। यही कारण है कि कई समुदाय के लोग अपने मूल स्थान को छोड़कर यहाँ आकर सानन्द जीवनयापन कर रहे हैं। जिसका देश पूरे विश्व को अपना परिवार मानता है वह कैसे यहाँ की संस्कृति, सभ्यता, सद्भावना, सहानुभूति एवं संवेदना से अपने को दूर रख सकता? उसके भीतर भी भारतीय परम्परा, संस्कार और संवेदना का आ जाना स्वाभाविक है। भारतीय संवेदना को अपनाकर यहाँ के लोगों ने हमेशा दूसरों की मदद करने के लिए अपने हाथों को बढ़ाया है। इन्हीं सहायता करने वालों में एक नाम 'माधवराव सप्रे' का भी है।

माधवराव सप्रे जी में भारतीय अस्मिताबोध और संवेदना इस तरह कूट–कूटकर भरी हुई थी कि वे देशभक्ति के भाव से सराबोर होकर घर आयी और अंग्रेज सरकार द्वारा दी गयी 'तहसीलदार' की नौकरी को ठोकर मार दी। सप्रे जी भारतीय संवेदना को जन–जन तक पहुँचाने के लिए बामन लाखे महोदय के सहयोग से एक मासिक पत्रिका 'छत्तीसगढ़ मित्र' का सन् 1900 में सम्पादन बिलासपुर जिले के छोटे से गाँव 'पेण्ड्रा' से किया। इस पत्रिका ने मात्र 3 वर्ष की अल्पायु में वह कर दिखाया जो आज–कल के बड़े–बड़े समाचार–पत्र या पत्रिका भरपूर संसाधन होते हुए भी नहीं कर पा रहे हैं। अर्थाभाव और तमाम संघर्ष के कारण यह पत्रिका 1903 में स्थगित हो गयी।

माधवराव भारतमाता के अमर और महान क्रांतिकारी सपूत के साथ–साथ उल्लेखनीय तथा संवेदनशील पत्रकार भी थे, हिन्दीभाषा के प्रोत्साहक थे तो प्रखर चिन्तक और विचारक भी, छत्तीसगढ़ पत्रकारिता के पितामह और मनीषी सम्पादक थे तो स्वतन्त्रता संग्राम के वीर सेनानी भी, सार्वजनिक कार्यों–हेतु तन–मन–धन अर्पित करने वाले स्वयं सेवक तैयार करने के प्रणेता थे तो प्रेरक–मार्गदर्शक गुरु भी, आज़ादी का बिगुल बजाने वाले थे तो प्रतिभा को पहचान कर पत्रकार बनाने वाले भी। सप्रे जी ने हिन्दी–पत्रकारिता द्वारा अपनी लेखनी की धार को तेज़ और प्रखर बनाकर हिन्दी नवजागरण में विशेष योगदान दिया तथा वे आधुनिक युग के भारतेन्दु मण्डल के समान पत्रकार और साहित्यकार दोनों गुणों से समुन्नत भी थे। पत्रकार होने के कारण राव जी समाज व राष्ट्र की ज्वलन्त समस्याओं को आसानी से पकड़ लेते थे तो साहित्यकार होने के कारण सच को जनता के समक्ष समझने लायक बनाकर उनकी भाषा में आसानी से व्यक्त कर देते थे। 'छत्तीसगढ़ मित्र' मासिक पत्रिका के अलावासप्रे जी ने लोकमान्य तिलक द्वारा सम्पादित 'मराठा केसरी' को 'हिन्दी केसरी' के रूप में सम्पादित किया तथा हिन्दी–कवियों और लेखकों को एकता के सूत्र में बाँधने और हिन्दीभाषा–छत्र के नीचे लाने के लिए 'हिन्दी–ग्रन्थमाला' के अन्तर्गत अनेक पुस्तकों का प्रकाशन किया एवं 'कर्मवीर' जो जबलपुर से प्रकाशित हुआ उसके प्रकाशन में भी महती भूमिका निभायी। ख़ुद मराठीभाषी होकर भी हिन्दीभाषा को अपनी लेखनी का आधार बनाया। माधव जी स्वयं कहते थे कि, ''मराठी मेरी मातृभाषा है, पर मैं अपनी माँ की गोद में नहीं पला हूँ।

हिन्दी मेरी मौसी है और यही मुझे पाला–सम्भाला करती है इसीलिए जो कुछ भी मुझसे सेवा बनी, मौसी की ही कर पाया।'' इसमें कोई सन्देह, किसी को भी नहीं करना चाहिए कि 'हिन्दी मौसी' के इस प्रेम को सप्रे जी अपने से कभी अलग नहीं कर पाये और आजीवन इसकी सेवा में तल्लीन रहते हुए खुद को समर्पित कर दिया–महावीरप्रसाद द्विवेदी के समान। माधवराव सप्रे जिस समय हिन्दी गद्य–लेखन–क्षेत्र में अपने पैर बढ़ाने शुरू किये थे उस समय हिन्दी–गद्य सृजनकर्त्ताओं को हेय समझा जाता तथा उपहास में 'कत्थक' की उपाधि से विभूषित किया जाता था। ऐसे विषम वातरवरण में